SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ में गोदना चित्रकलाएं

ममता सिरमौर वर्मा, (Ph.D.) समाजशास्त्र अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
ममता सिरमौर वर्मा (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 11/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 19/05/2023
Plagiarism : 01% on 11/05/2023

शोध सार

विभिन्न प्रकार के गोदना पहचान चिह्नों के रूप में कार्य करते हैं जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक जातीय समूह को दूसरे जातीय समूह से और एक संस्कृति क्षेत्र को दूसरे संस्कृति क्षेत्र से अलग करते हैं। सरगुजा और रायगढ़ जिलों में रहने वाली उरांव जनजाति की महिलाएँ अपने माथे पर तीन रेखाएँ गुदवाती हैं। भील महिलाओं के दोनों आँखों के कोण पर विशिष्ट पक्षी जैसा गोदना होता है। यह उन्हें स्थायी रूप से लंबी पलकों वाला रूप आकार देता है। पक्षी और बिच्छू आकृति विशेष रूप से भील लोगों में पायी जाती है। बैगा जनजाति की महिलाओं में उनके माथे के केंद्र में भौंहों के बीच 'वी' आकृति का विशिष्ट गोदना होता है। गोदना के कुछ सामान्य और लोकप्रिय आकृति आदिवासियों की मुख्य पसंद हैं। वे फूल और ज्यामितीय डिज़ाइन, घोड़े, सवार के साथ हाथी, बिच्छु, मोर, और आदिवासी मिथकों को चित्रित करते हैं। सामान्यतः लड़कियों को फूलों का गोदना, जबकि छोटी लड़कियों को चेहरे के विभिन्न स्थानों पर एकल बिंदु या माथे पर घोड़े की नाल जैसा अर्ध चक्र पसंद होता है। बुजुर्ग महिलाएँ बिच्छू, हिरण, मोर तथा टखनों, हाथों और कंधों पर फूलों जैसे आकृति के गोदना पसंद करती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में छत्तीसगढ़ में गोदना चित्रांकन के बारे में विस्तार से बताया गया है। साथ ही छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में गोदना के महत्त्व को भी बताया गया है।

मुख्य शब्द

गोदना, लोक संस्कृति, छत्तीसगढ़.

"नाक गोदा ले नाक के फूली, माथ गोदा ले बिंदिया।
बाँह गोदा ले बाँह बहुटवा, हाथ गोदा ले ककनी।।
माँग ऊपर छै बुन्दिया गोदा ले, पाँव गोदा ले बिछिया।
हिरदे में तोर राम गोदा ले, दाग लगा ले छतिया।।"

तात्पर्य यह है कि नाम में गोदना रूपी फुल्ली गुदवा ले, मांथे पर बिंदिया गुदवा ले, बाँह पर बाँह बहुटवा और हाथ में ककनी रूपी गुदना गुदवा ले। माँग पर छः बिन्दु रूपी बिंदिया गुदवा ले, पाँव पर बिछिया गुदवा ले और हृदय में तुम राम नाम गुदवा लो और इस नाम का दाग लगवाकर अपने जीवन को सफल बना लो।

गुदनों का आदिवासी समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान है। यह न केवल बस्तर में बल्कि विदेशों में भी प्रचलित है। भारतीय आदिवासी समाज में इस प्रथा के संबंध में श्री चंद्र जैन का कथन है – कि ''आदिवासी लोक जीवन में यह परिपाटी उसी प्रकार व्याप्त है जिस भाँति जल में शीतलता, आग में उष्णता एवं दूध में नवनीत समाहित है।''[1]

"भारतीय लोक संस्कृति में तिल और गोदना यह दोनों ही सौंदर्य के प्रमुख उपादान माने गए हैं। इनसे सुंदरता में पर्याप्त अभिवृद्धि होती है तथा यह ही खूबसूरती के सागर में ऐसा अनोखा तूफान लाते हैं जिससे सौंदर्य प्रेमियों के सरस मानस में कभी आसानी से बेचैनी उत्पन्न हो जाती है तो कभी सलोनी रमणीयत से ईठलाने लगती है।"[2]

हिंदू धर्म में लगभग सभी जातियों में गोदना प्रथा आदि काल से प्रचलित है। यह प्रथा धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक तथ्यों से जुड़ी हुई है। गोदना शब्द का शाब्दिक अर्थ चुभाना है। शरीर में सुई चुभाकर कर उसमें काले या नीले रंग का लेप लगाकर गोदना कलाकृति बनाई जाती है। इसे अंग्रेजी में टैटू कहते हैं। कहीं–कहीं इसे गुदना नाम से भी जाना जाता है।

कहा जाता है कि यदि महिलाएँ अपने आराध्य देवी–देवताओं को अपनी छाती या स्तनों पर गुदवा लें, तो ये देवी–देवता जादू–टोने से रक्षा करते हैं। रसेल एवं हीरालाल इसके पक्ष में कहते हैं कि ''गुदने का मूल आशय वास्तविक अथवा आध्यात्मिक आपदा से रक्षा करना है। कभी–कभी यह भी होता है कि लोग अपने टोटम की आकृतियों को अपनी जातिगत पहचान के लिए भी गुदवाती हैं।"

गोदना गुदवाना सांस्कृतिक एवं धार्मिक विश्वासों से जुड़ा हुआ है साथ ही इसमें सौंदर्य की भावना भी प्रमुख है। गोदना शरीर का स्थायी चित्र सज्जा ही नहीं बल्कि यह जादुई प्रभावों से बचने और पराशक्ति के प्रकोप को अनुकूल करने के रूप में प्रतिष्ठित है। कुछ व्यक्तियों द्वारा श्रद्धा व अन्य प्रकोपों से रक्षा के लिए ईष्टदेव का नाम या आकृति गुदवाया जाता है।

एक ऐसी अलंकरण प्रणाली का नाम गोदना है, जिसका संबंध सीधे लोक संस्कृति से जुड़ता है। जहां त्वचा चित्रांकन का नाम गोदना है, वही त्वचा चित्र को भी गोदना ही कहते हैं। गोदना शब्द के कई अर्थ होते हैं। चुभाना या गड़ाना किसी कार्य के लिए बार–बार जोर देना, चुभती या लगती हुई बात कहना, ताना मारना, नीलिया कोयले के पानी में सुई को डुबोकर शरीर को विविध प्रकार से चिन्हित करना और गोदने से बनी आकृति। मुहावरे की भांति प्रयुक्त होने वाले इस क्रियार्थक संज्ञा शब्द का महत्व ना केवल भारत मे अपितु संसार के विभिन्न मानव कुटुंब में भी प्राचीन काल से लेकर आज तक निरंतर प्रतिपादित होता आ रहा है। शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण, शहरी समस्त परिजनों के शरीर को गोदना अलंकृत करता आ रहा है।"[3]

महाभारत काल में श्री कृष्ण गोदने वाले का रूप धारण करके राधा को गोदना गोदने गए थे। यह बताना कठिन है कि इसकी शुरुआत कब और कैसे हुई होगी। ऐसा मालूम पड़ता है कि इस प्रथा की शुरुआत अपने कुनबे की पहचान के लिए हुई होगी। यही कारण है कि हिंदू धर्म में लगभग सभी जातियों में गोदना प्रथा का प्रचलन है। अपने हाथों में नाम लिखवाना या कोई धार्मिक शब्द लिखवाना इस प्रथा को बल देता है।

गोदना सिंधु घाटी सभ्यता के बाद आर्य लोगों के आगमन के बाद माना जाता है। इसके पीछे धारणा प्रचलित है जब आर्य लोग भारत में आक्रमण किए यहां के मूल निवासियों पर अत्याचार किए, साथ ही साथ यहां के मूल निवासियों के महिलाओं के साथ में दुराचार भी करते थे और दूसरी ज्यादा सुंदर स्त्री होती थी उसे अपनी पटरानी बनाने के लिए ले जाते थे। इससे परेशान होकर यहां के मूल निवासी अपने स्त्रीयों को कुरूप दिखाने के लिए उनके शरीर में वह गोदना गुदाना शुरू कर दिए ताकि किसी महिला को आर्य लोग अपने साथ न ले जाएं। धीरे–धीरे सभी

वर्गों और जाति के सांस्कृतिक धार्मिक और सामाजिक पक्ष में जुड़ गया।

इसे ऐसा अलंकरण माना जाता है जो शरीर के साथ ही जाता है। सोना, चांदी, पीतल, तांबा तथा अन्य रत्न आभूषण मनुष्य के साथ नहीं जाते हैं, बल्कि यही गोदना इनके साथ जाता है। गोदने को ना कोई चुरा सकता है, ना कोई ले जा सकता है, ना उतार सकता है, ना कोई अपना हिस्सा मांग सकता है। इतने सस्ते में इतना स्थाई आभूषण गोदना के सिवाय संसार में और कोई दूसरा अलंकरण हो ही नहीं सकता। लोक मान्यता के अनुसार टोने–टोटके और भूत–प्रेत आदि से बचाव के लिए गोदना को जनजातीय समाज में रक्षा कवच की तरह अनिवार्य माना जाता है। मान्यता के अनुसार गोदना नहीं गोदने पर मरने के बाद यमदूत ऊपर पूर्व में सब्बल के साथ गोदते हैं।

अंग पर वही वस्तुएं प्रायः अंकित की जाती हैं जिनका जीवन से सीधा संपर्क होता है। लोक विश्वास के संबंध में यह धारणा प्रचलित है कि जो बालक चलने आदि में कमजोर होता है उसकी जांघ या उसके आसपास गोदने से वह चलने दौड़ने में पूर्ण सक्षम हो जाता है। यद्यपि यह सौंदर्यवर्धक अवश्य है फिर भी आदिवासी समुदाय के ऊपर अश्व तथा अन्य चिन्हों को गुदवाते हैं और इस प्रकार अपने कुलदेव घोड़ा देव के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं। कुछ जनजातियां देवताओं के प्रति आस्था अभिव्यक्त करती रहती हैं।[4]

"लाला जगदलपुरी ने बस्तर इतिहास एवं संस्कृति में लिखा है कि बस्तर के घोटूल मुरिया समाज की मोटियारिन और बेलोसा जाति में पहले इस अलंकरण प्रणाली का प्रचलन अधिक था। कपाल पर बीच टीका, टीके के दोनों ओर सात–सात खड़ी रेखाएं, नाक पर भी खड़ी रेखाएं और तीन–तीन, चार–चार बिंदिया, बाँहों में तथा कलाइयों और हथेलियों के ऊपरी भाग पर भी आजू–बाजू दो–दो और ऊपर एक बिंदिया। बस्तर अंचल की अन्य जनजातियों की कतिपय स्त्रियों में भी गोदने के लगभग ऐसे ही निशान पाए जाते हैं"।[5]

हम कह सकते हैं कि गोदना निम्नलिखित प्रयोजन हेतु मुख्य रूप से गुदवाया जाता हैः

1. सौंदर्य वृद्धि।
2. रोगोपचार।
3. जाति या समुदाय की पहचान हेतु।
4. मृत्यु पश्चात स्वर्ग जाना।
5. अनिष्ट निवारण।

गोदना रूपी गहना शरीर में हमेशा साथ रहता है इसलिए इसे अमर श्रृंगारी गहना या स्वर्ग अलंकरण भी कहते हैं। एक समय था जब गोदना प्रथा का प्रचलन अधिक था, अब धीरे–धीरे यह प्रथा दम तोड़ती जा रही है। नए पीढ़ी के लोग इस प्रथा को स्वीकार नहीं करते हैं। कई लोगों से चर्चा करने पर ज्ञात हुआ कि इस प्रथा को हमारे पूर्वज अधिक मानते थे। संपूर्ण शरीर में गोदना गोदवाने से शरीर की सुंदरता बिगड़ जाती है। गोदना के बारे में चाहे जैसी भी धारणा हो लेकिन एक बात है कि आदिवासी भले ही रूढ़ीवादी हो, जाने–अनजाने में अपनी पुरानी संस्कृति और परंपरा को आज भी बचाए हुए हैं। लुप्त होती गोदना प्रथा को जीवित रखने से ही जनजाति संस्कृति को भी संरक्षित किया जा सकता है। पहले संपूर्ण शरीर में चित्रकारी किया जाता था। इससे गोदना कला के बचाव के साथ सहायता महत्वपूर्ण साधन भी साबित हो रहा है और महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत हो रही हैं। छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा समय–समय पर गोदना आर्ट का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

निष्कर्ष

गोदना गुदवाने के लिए कोई उम्र सीमा नहीं होती, यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। ''गोदना को कोई चुरा नहीं सकता, छीन नहीं सकता, हिस्सों में माँग नहीं सकता और ना ही उतार सकता है।''[6] ''इस तरह गोदना सामाजिक प्रतिष्ठा, जनजातियों की विशिष्ट पहचान, अद्‌भुत कला, उपकरण की प्रतीक आत्मिक आध्यात्मिक सुख प्रदान करने वाला, शरीर को स्वस्थ, पीड़ाहीन रखने वाला, आभूषणों के स्थान पर अलंकार से आदिवासी बालाओं, महिलाओं को संतुष्टि और आनंद प्रदान करने वाला, शारीरिक साज–सज्जा के साथ जाति चिन्हों की

पहचान करने की अद्भुत अप्रतिम कला है। यह छत्तीसगढ़ की अत्यंत लोकप्रिय रूपंकरण की अद्वितीय कला है जो गाँवों में महिलाओं के बीच सुरक्षित और जीवंत है।''[7]

गोदना के विषय में कहा जा सकता है कि गोदना एक अमर श्रृंगारी गहना, यादगार प्रतीक चिन्ह, रोगों से मुक्ति और दर्द निवारक का सार्थक उपाय है। गोदना प्रथा को जीवित रखने से ही हमारी पुरानी संस्कृति बची रहेगी।

संदर्भ सूची

1. नायडू. पी. आर., *भारत के आदिवासी,* राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997,पृष्ठ 440।
2. *चौमासा,* अंक 25 आदिवासी लोक कला परिषद्, भोपाल फरवरी– जून 1991 पृष्ठ 55।
3. लाला जगदलपुरी, *बस्तर इतिहास एवं संस्कृति मध्यप्रदेश,* हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल चतुर्थ संस्करण 2016 पृष्ठ 256।
4. लाला जगदलपुरी, *बस्तर इतिहास एवं संस्कृति मध्यप्रदेश,* हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल चतुर्थ संस्करण 2016 पृष्ठ 256।
5. वही, पृष्ठ 257।
6. बेहार, रामकुमार, छत्तीसगढ़ी संस्कृति और विभूतियाँ, छत्तीसगढ़ शोध संस्थान, 2003 पृष्ठ 92।
7. शर्मा, निरूपमा, *सर्वहारा,* सितम्बर 2004, पृष्ठ 9।

****